जनचेतना का प्रगतिशील कथा-मासिक

ISSN 2454-4450

मूल्य ₹ 60

हंस

मार्च 2025

संपादक
संजय सहाय
•
प्रबंध निदेशक
रचना यादव
•
व्यवस्थापक/सह-संपादन सहयोग
वीना उनियाल
•
संपादन सहयोग
शोभा अक्षर
माने मकर्तच्यान(अवैतनिक)
•
प्रसार एवं लेखा प्रबंधक
हारिस महमूद
•
शब्द-संयोजन एवं रूपांकन
प्रेमचंद गौतम
•
ग्राफिक्स
साद अहमद
•
कार्यालय सहायक
किशन कुमार, दुर्गा प्रसाद
•
मुख्य प्रतिनिधि (उ.प्र.)
राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल
•
रेखाचित्र
मार्टिन जॉन, शैलेन्द्र सरस्वती, रोहित प्रसाद

कार्यालय
अक्षर प्रकाशन प्रा. लि.
4229/1, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-2
व्हाट्सऐप : 9717239112, 9560685114
दूरभाष : 011-41050047
ईमेल : editorhans@gmail.com
वेबसाइट : www.hanshindimagazine.in

मूल्य : 60 रुपए प्रति
वार्षिक : 700 रुपए (व्यक्तिगत)
रजिस्टर्ड : 1100 रुपए
संस्था/पुस्तकालय : 900 रुपए (संस्थागत)
रजिस्टर्ड : 1300 रुपए
विदेशों में : 80 डॉलर
सारे भुगतान मनीऑर्डर/चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा अक्षर प्रकाशन प्रा. लि. (Akshar Prakashan Pvt. Ltd.) के नाम से किए जाएं.

हंस/अक्षर प्रकाशन प्रा.लि. से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे. अंक में प्रकाशित सामग्री के पुनर्प्रकाशन के लिए लिखित अनुमति अनिवार्य है. हंस में प्रकाशित रचनाओं में विचार लेखकों के अपने हैं. उनसे हंस की सहमति अनिवार्य नहीं है. साथ ही उनके मौलिक या अप्रकाशित होने का उत्तरदायित्व संपादक और प्रकाशक का नहीं है बल्कि यह दायित्व रचनाकार का है.

प्रकाशक/मुद्रक : **रचना यादव खन्ना** द्वारा अक्षर प्रकाशन प्रा.लि., 4229/1, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित एवं चार दिशाएं, जी-39/40, सेक्टर-3, नोएडा- 201301 (उ.प्र.) से मुद्रित. संपादक–संजय सहाय.

मार्च, 2025

मूल संस्थापक : **प्रेमचंद : 1930**
पुनर्संस्थापक : **राजेन्द्र यादव : 1986**

पूर्णांक-461 वर्ष : 39 अंक : 8 मार्च 2025

आवरण : नरेन्द्र नागदेव

जनचेतना का प्रगतिशील कथा-मासिक

इस अंक में

संपादकीय
4. दुनिया का मेला : संजय सहाय

अपना मोर्चा
7. पत्र

न हन्यते
11. जिंदादिली और प्रेरणा की प्रतीक : विश्वनाथ त्रिपाठी
12. अथक और उजली सक्रियता की धनी : अशोक वाजपेयी
14. अदम्य साहस और विवेक की मिसाल : नलिन विकास

मुड़-मुड़ के देख
16. भाइयो, मुझे जड़ की तलाश है : सत्य नारायण ('हंस', जनवरी 1987)

आने वाले दिनों के सफ़ीरों के नाम
21. स्त्री को अपने मन में उतरने का अवसर ही नहीं मिलता... : (उषा प्रियम्वदा के साथ रवीन्द्र त्रिपाठी की बातचीत)

कहानियां
32. उम्मीद ज्यादा : आनंद हर्षुल
43. बैंजनी समंदर : ज्योत्स्ना मिश्रा
48. स्याह-सफेद धागे : सिद्धनाथ सागर
53. तलईकूत्तल : आलोक रंजन
62. अमित्राक्षर : मामणि रयछम गोस्वामी (असमिया कहानी) (अनुवाद : आलिया जेसमिना)

ग़ज़ल
20. 71. 85. राजेन्द्र गौतम
74. अनुराग 'अमन' बाजपेई
88. कविता विकास

कविताएं
60. सतीश बलराम अग्निहोत्री, चाहत अन्वी निखिल आनंद गिरि
61. अनूप श्रीवास्तव

लेख
65. संकट में उच्च शिक्षा : रसाल सिंह

परख
70. स्त्री लेखन की बौद्धिक परंपरा : राजेन्द्र दानी
72. जीवन के अंधेरों से उठती आवाजें : महेश कटारे
75. रोशनी को तलाशती कहानियां : सुषमा मुनीन्द्र
77. स्त्री कहानी का आयतन : शशिभूषण मिश्र
80. विविधरंगी पठनीय कहानियां : परदेशीराम वर्मा
83. स्त्री जीवन की महागाथा : अंशु प्रिया
86. वो जो था ख्वाब सा : सुप्रिया पाठक

साहित्यनामा
89. मन, तू पार उतर कहँ जैहौ : साधना अग्रवाल

रेतघड़ी
94-97

दुनिया का मेला

पहली शताब्दी के रोमन सम्राट गायस ज़ीजर ऑगस्टस जर्मैनिकस उर्फ कैलीगुला के बारे में मशहूर था कि वह अपने प्रिय घोड़े इंकिटाटूस को तरह-तरह के तोहफों से नवाजा करता था. उसे राजसी दस्तरख्वान पर ले आता था जहां उसे सोने के वर्क में लिपटे जई के दाने परोसे जाते थे. उपस्थित सभासदों-अतिथियों को उस घोड़े को सलामी भी बजानी पड़ती थी. कुछ इतिहासकार तो यहां तक दावा करते हैं कि कैलीगुला उस घोड़े को सेनेटर और उससे भी बढ़कर रोमन साम्राज्य के सर्वोच्च अधिकारी 'कौंसल' के पद पर नियुक्त करने का मन बना चुका था. सच्चाई जो भी हो लेकिन यह निश्चित रूप से कैलीगुला का एक तरीका था–दूसरे सभासदों, दरबारियों, क्षत्रपों और छोटे राजाओं को उनकी औकात दिखाने का!

खैर, वह अतीत के राजा-महाराजा-सम्राटों के किस्से थे. किंतु हाल फिलहाल में ऐसा ही कुछ अपने विश्वगुरु की पिछली अमेरिकी यात्रा पर देखने को मिला जब वे ईलौन मस्क से मिलने ट्रम्प के श्वेत महल में जा पहुंचे थे. एक तरफ ईलौन मस्क अपनी आया और बच्चों के साथ बैठे हुए थे जबकि दूसरी तरफ विश्वगुरु के साथ भारत के मंत्री-संत्री और उच्चाधिकारी बड़े अदब के साथ पेश आ रहे थे. भला हुआ कि ईलौन मस्क ने इस शिष्टमंडल के आगे अपने शिशुओं और आया को ही बिठाया था, किसी पालतू घोड़े-बिल्ली या कुत्ते को नहीं, वरना शायद हम उनके आगे भी दांत निपोर रहे होते. इससे दो बातें साफ हो जाती हैं कि या तो शिष्टमंडल बिना आमंत्रण के वहां जा धमका था, या फिर ईलौन मस्क कैलीगुला की तरह ही सबको उनकी औकात दिखा रहे थे! यह सारा कुछ बेहद शर्मनाक था.

दूसरी तरफ मस्क के मालिक या चाकर, वे सचमुच में चाहे जो हों–ने हमारे मुल्क का उपहास उड़ाने में कोई कसर नहीं छोड़ी, वह भी बड़े शातिराना. अंदाज में–जिसके लिए बिहार में एक खास जुमला प्रचलित है–अतिशय विनम्रता दर्शाते हुए, साहब की कुर्सी सरकाते हुए ट्रम्प ने हमारा मजाक बनाकर रख दिया. ऊपर से उन्होंने भारत